PUBLISHED BOOKS

Shri Sayaji Pratishthan

1) बड़ौदा में श्री अरविन्द के तेरह वर्ष – (Feb'2023)

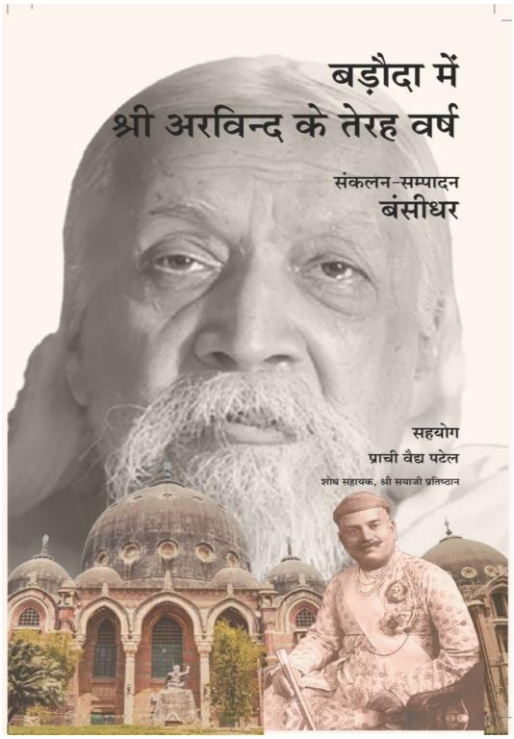

- दुनिया श्री अरविन्द को एक महान योगी और सावित्री महाकाव्य के रचयिता रूप में ही विशेष रूप से जानती है | इससे भिन्न उनका एक क्रांतिकारी रूप भी रहा है, उसे लगभग भुला दिया गया है | इस पुस्तिका में उनके इसी विस्मृत रूप से पाठकों को परिचित कराने का प्रयास किया गया है |
- श्री अरविन्द जब इग्लैण्ड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में छात्र थे, तभी से उनमें राष्ट्रीयता का गहन बोध पैदा हो चुका था | यही गहन बोध उनके मन में भारतमाता को पराधीनता के बंधन से मुक्त कराने के संकल्प का जनक है |
- श्री अरविन्द तेरह वर्ष से कुछ अधिक समय तक बड़ौदा राज्य की सेवा में रहे | यहाँ उन्होंने प्रशासन और स्थानीय तत्कालीन बड़ौदा कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दीं | तेरह वर्ष का यही काल उनके द्वारा भारतीय आर्ष ग्रंथों के अध्ययन-मनन और उनकी शीर्षस्थ क्रांतिकारी गतिविधियों से सम्बद्ध रहा है | तत्कालीन महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ (तृतीय) का उनकी इन क्रांतिकारी प्रवृत्तियों को भरपूर समर्थन और सहयोग मिला | विस्तृत वर्णन के लिए देखिए पुस्तिका का प्रकरण छह और सात | तथा श्री अरविन्द के राजनीतिक दर्शन में जो परिवर्तन आया तथा बंग-भंग आन्दोलन में जिस खुली राजनीति को उन्होंने अपनाया इसका संकेत प्रकरण आठ तथा नौ में किया गया है | उनकी योग-साधना यहाँ गौण ही बनी रही |
- बड़ौदा में श्री अरविन्द द्वारा चलाये गये क्रांति-यज्ञ में उनके कुछ विश्वस्त साथी थे जो क्रांति सम्बन्धी प्रत्येक गतिविधि और योजना में उनके साथ रहे | देश के स्वाधीनता संग्राम में इनका त्याग एवं समर्पण आज भी उचित मूल्यांकन की प्रतीक्षा में है |

2) आर्यसमाज और महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ (तृतीय) (MAY-2022)

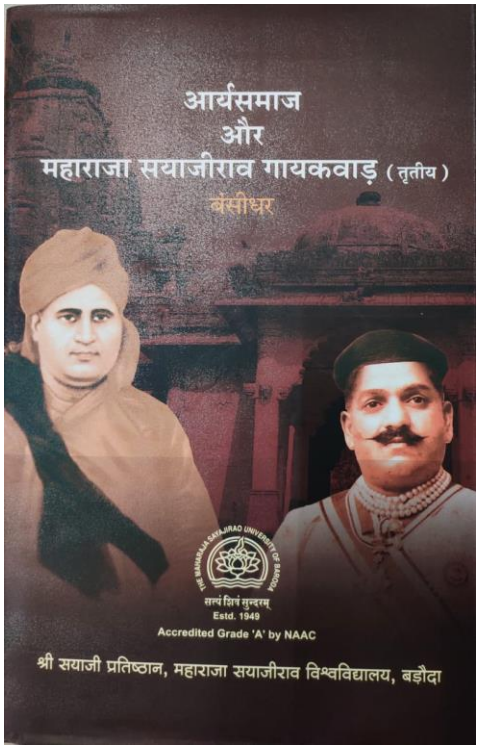

- स्वामी दयानंद सरस्वती उन महनीय व्यक्तित्वों में से एक थे जिन्हें भारत ने अब तक विश्व को उपहार में दिये हैं । वे विशुद्ध वैदिक या भारतीय संस्कृति के उत्पाद थे, जो पूरी तरह से वेदों तथा वैदिक शास्त्रों की दिव्य शिक्षाओं से अनुप्राणित थे। उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वैदिक तत्त्वज्ञान और वैदिक जीवन शैली को पुनर्जीवित करने का भगीरथ प्रयास किया और जनता का बहविध शोषण करने वाली विभिन्न स्थापित एवं शक्तिशाली स्वार्थी ताकतों से अविरत संघर्ष करते हुए नवजागरण का सूत्रपात किया ।
- स्वामी दयानंद ने तत्कालीन कई देशी राज्यों के शासकों तथा अग्रगण्य महानुभावों को स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वभाषा, राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वदेशी और स्वराज्य के लिए जाग्रत करने का उपक्रम भी चलाया था कि जिससे मातृभूमि को पराधीनता के बंधनों से विमुक्त कर वैदिक समाज व्यवस्था को चरितार्थ किया जा सके । वास्तव में स्वामीजी इन शासकों को राष्ट्रीय जागरण और सामाजिक सुधारों का माध्यम बनाना चाहते थे । इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने आर्यसमाज का प्रवर्तन किया और अपने भाषणों, प्रवचनों, शास्त्रार्थों, ग्रंथों आदि के माध्यम से देश में चतुर्दिक वैदिक आलोक फैलाकर नवजागरण के बहुविध कार्यक्रम चलाए ।
- वडोदरा के जगप्रसिद्ध नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ भी स्वामी दयानंद के प्रशंसकों और अनुयायियों में से एक थे । उन्होंने अपने राज्य में स्वामीजी की शिक्षाओं को क्रियान्वित करने के लिए संनिष्ठ प्रयास किए । दलित वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबंध करना, सब के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करना, हिन्दी को लोकप्रिय बनाना, संस्कृत का संवर्धन करना, जनजागृति के लिए उत्तम पठनीय सामग्री युक्त पुस्तकों को प्रकाशित कर जनता के लिए सुलभ करना, जन्म आधारित जातिप्रथा का उन्मूलन करना, न्याय प्रणाली में सुधार

करना आदि अनेक कार्य महाराजा सयाजीराव के शासन काल में हुए ।

- डॉ. बंसीधरजी शर्मा ने अपनी इस महत्त्वपूर्ण कृति में महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ और आर्यसमाज के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत कर एक अति आवश्यक कार्य की पूर्ति की है। उन्होंने यह पुस्तक प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर लिखी है और अपने विषय को अत्यंत प्रभावोत्पादक शैली में प्रस्तुत किया है। इस अनुसंधानपूर्ण पुस्तक को लिखने में उन्होंने महान परिश्रम किया है और पर्याप्त सावधानी बरती है ।
- आर्यसमाज के क्षेत्र में तो इस पुस्तक का विशेष समादर होना ही चाहिए, क्योंकि इसमें आर्यसमाज के स्वर्णिम इतिहास के गौरवास्पद पृष्ठ संगृहित हैं । इतना ही नहीं, बल्कि इस पुस्तक से वे सभी पाठक भी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे जो महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ के सुशासन की असामान्य लोकप्रियता के रहस्य जानना चाहते है और यह जानने के इच्छुक है कि उन पर स्वामी दयानंद और उनके द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज की वैदिक शिक्षाओं का कितना गहरा प्रभाव रहा था।
- इस उत्तम कृति के लिए लेखक महोदय एवं प्रकाशन संस्था दोनों को हार्दिक बधाई ।

3) The Rulers of Baroda (Jan-2021)

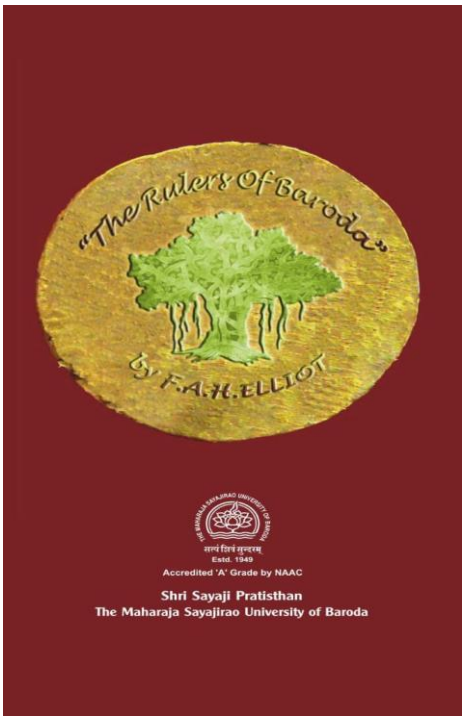

- To this little history the name has been given at "The Rulers of Baroda." It deals with the political careers of those men and classes who have exercised authority over the people of a large portion of Gujarat during, now, more than a century and a half: namely, the Gaekwad Rajas, their relations, their ministers, the military nobles, the money-lenders, the farmers of revenue, and the sacerdotal or clerkly classes. It says something, too, of the Peshwas, the British Residents, their Native Agents and others who at one time or another have shared in the authority of the Gaekwads and the Maratha party that followed them. Of the physical aspect of the country of Gujarat, at its people, their customs and manners, of the cities and holy places, little or nothing has been said.
- The book has been written with the double view of serving as a slight work of reference for public servants, and of affording information to young men who are about to pass from school or college into public life. It is chiefly that the latter may not be puzzled or bored with too minute details that certain lists of accounts of expenses and receipts, and other matters, have been placed among notes to which the curious only need turn. In the same way, short biographies of some prominent men, doubtful or conjectural facts, and occasional dissertations; have been relegated to small print at the end at the chapter.

- The chief reasons for writing the book are very simple. It seems a pity that there should be no consecutive account of the main events in the history of so important a State as that of Baroda. The nearest approach to such an account is Colonel Wallace's "Gaekwad and his relations with the British Government", and there will 'probably appear before long a "Baroda Gazetteer." But neither work is likely to be within the reach of the persons for whom this book is principally designed. Again, however faulty the attempt here made may be, the present moment seems to be a fit one for its undertaking, for old things are now rapidly making way for new, and a record of the former should be plainly given before their memory becomes dimmed.

- The main sources from which information has been derived are English: Tod's Rajasthan, Forbes' Ras Mala, Major Watson's contribution to the Gazetteer of Gujarat, Grant Duff's History of the Marathas, Forbes' Oriental Memoirs, Major Wallace's History; and a large number of records in the Baroda Residency, a pile of Blue Books, and two or three MS. Precis of Histories, with some dozen other works, have been drawn upon. If Mr. Baine's portion of the Gujarat Gazetteer had appeared early enough, it would have been laid under contribution to supplement some omissions. Nor has it been thought necessary to acknowledge the use made at Standard or Government works, as this book does not pretend to possess any literary merit. It is true that advantage has also been taken of the few obtainable Maratha MSS, and of some Records in the State Daftar, while the opinions on certain points of some native gentlemen have been collected: but for the most part the sources from which information has been derived are English. If some day a native of the country were to compile a History of the State from, say. Maratha Records regarded from a Maratha point of view, the result would be more valuable than the one now obtained.

- As the ground gone over is in many parts new, important facts may have been omitted and inaccuracies have been suffered to creep in. Should any reader kindly take notice of such shortcomings and point them out to the author, he will contribute to the improvement of the next edition. There are portions of the history which require elucidation or amplification, and they require it because materials have been wanting to the writer. The history of the Girasias, of the slow conquest of the tributary States not included in Kathiawad, of the Brahmans of Gujarat and of the Deccan and Konkan, and of many other matters, has been slurred over.

4) ક્રાંતિકારી અંદોલનના અપ્રતિમ સંરક્ષક મહારાજા સયાજીરાવ ગાયકવાડ-તૃતીય(May 2021)

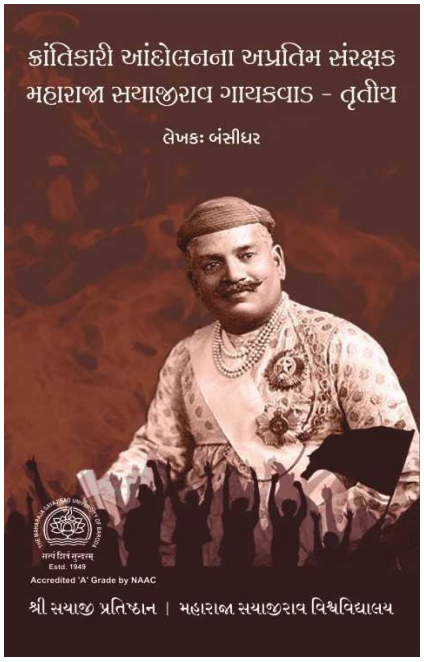

- સન ૧૮૫૭ના નિષ્ફળ સ્વાધીનતા સંગ્રામ પછી ભારતમાં અંગ્રેજી રાજનો વહીવટ ઇંગ્લેન્ડની પાર્લિયામેન્ટે પોતાના હાથમાં લઈ લીધો હતો. આ અંગે મહારાણી વિક્ટોરિયાએ બહાર પાડેલા ઘોષણા-પત્રમાં લોભામણી જાહેરાતો કરીને ભારતની પ્રજામાં વ્યાપ્ત આક્રોશ અને અસંતોષ ઓછો કરવાનો હેતુ હતો પરંતુ તેવું કાંઈ થયું નહીં. દેશમાં અંગ્રેજોની દમનકારી સત્તાએ સળગાવેલ દાવાનળ સતત સળગતો હોવા છતાં પણ સ્વતંત્રતા માટેનો સંઘર્ષ ચાલુ રહ્યો અને એક નહીં પણ અનેક મોરચે ચાલુ રહ્યો. મુખ્યત્વે
- ક્રાંતિકારીઓ અને 'અખિલ ભારતીય કોંગ્રેસ'ની આગેવાની હેઠળ ભારતની પ્રજાનો આ સંઘર્ષ ત્યાં સુધી ચાલુ રહ્યો જ્યાં સુધી દેશ સ્વતંત્ર ના થયો. સ્વતંત્રતાના આ જંગમાં જે મહાપુરુષોએ પોતાનું યોગદાન આપ્યું તેમાં એક નામ મહારાજા સયાજીરાવ ગાયકવાડ (ત્રીજા)નું પણ છે.
- એક દેશી રાજા હોવાને કારણે તેમના માર્ગમાં અંગ્રજોએ કેટલાય અવરોધો અને અડચણો ઊભી કરી હતી. તેમ છતાં પણ તેની પરવા કર્યા વગર તેમણે જે સાહસ અને રાજપુરુષને છાજે તેવી કુશળતા દર્શાવી ક્રાંતિકારીઓની પ્રવૃત્તિઓમાં અને રાષ્ટ્રીય કોંગ્રેસના આંદોલનોમાં જે રીતે સહયોગ આપ્યો તે આપણા સ્વતંત્રતા સંગ્રામના ઇતિહાસનું એક બહુ જ આલોક્તિ અને યાદગાર પ્રકરણ છે. રાષ્ટ્ર અને સ્વતંત્રતાને જ તેઓ મહત્ત્વ આપતા હતા અને પોતાના સમગ્ર શાસનકાળ દરમ્યાન તેમણે જે પણ કામો કર્યાં તે બધાનાં મૂળમાં તો આ ભાવના જ કેન્દ્રમાં હતી.
- ઈ. સ. ૧૮૫૭ના સ્વાતંત્ર્ય સંગ્રામની નિષ્ફળતા પછી વડોદરા રાજ્યએ જે સાહસ અને મહેનતથી ક્રાંતિકારીઓની એક આખી નવી જમાત ઊભી કરી દીધી અને અંગ્રેજોની ગંદી ફૂટનીતિ તથા અત્યાચારોનો જે જડબાતોડ જવાબ આપ્યો તેનાં દેદીપ્યમાન સાક્ષીઓ છે, શ્રી અરવિંદ ઘોષનું 'ભવાની મંદિર", વીર સાવરકરની સંસ્થા 'અભિનવ ભારત', સંન્યાસી બ્રહ્માનંદનું 'ગંગનાથ ભારતીય વિદ્યાલય', ક્રાંતિવાદના પ્રતીક પરંતુ સ્વયં વડોદરા-નરેશ સયાજીરાવ ગાયકવાડ હતા. તેમણે સ્વતંત્રતાની લડતની મશાલને સતત પ્રજ્વલિત રાખી. તે સમયના
- સમાન 'કમળ તથા ખંજર', બોમ્બ બનાવવાની આંટીઘૂંટીની સમજ આપતું પુસ્તક 'વનસ્પતિની દવાઓ' વગેરે વગેરે. આ સહુને પોતાના રાજ્યમાં આશ્રય આપનાર તથા તેની પ્રવૃત્તિઓને વ્યાપક બનાવવામાં મહત્ત્વનું યોગદાન આપનાર અન્ય કોઇ નહીં પોતાના પ્રાણની આહુતિ આપનાર ક્રાંતિવીરોના રક્તથી સિંચીત ઇતિહાસની એ તવારીખના હજી સુધી અજાણ રહેલા પ્રસંગોની વાતો રૂંવાડાં ઊભા કરી દે તેવી અને સાથે જ પ્રેરણાદાયી પણ છે.

5) महाराजा सयाजीराव मानवता के शिखर पुरुष (DEC-2019)

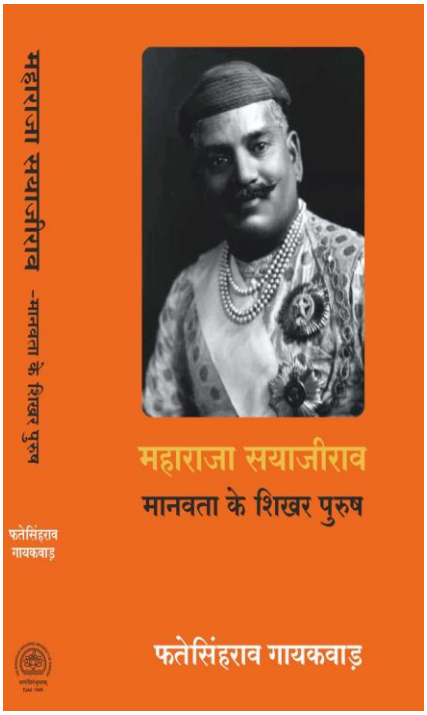

- सयाजीराव तृतीय तेरह वर्ष की कच्ची आयु में बड़ौदा के महाराजा बने और इस रूप में एक विशाल संपदा और ताकत के उत्तराधिकारी। किसान परिवार में पले-बढ़े इस बालक को अंग्रेज यह सोचकर लाए थे कि वह उनकी हर बात मानने वाला राजा होगा, किंतु महाराजा ने दिखा दिया कि वे पूरी तरह स्वतंत्र हैं। वे एक प्रबुद्ध राजा थे। प्रजा का कल्याण ही उनकी सबसे बड़ी चिंता थी। प्रजा की भलाई के लिए उन्होंने जो- जो कार्य किए, उनके बारे में उस समय तक पश्चिमी जगत ने भी विचार नहीं किया था। वे एक के बाद एक राजनैतिक, सामाजिक, प्रशासनिक और शैक्षणिक सुधार करते चले गए। वैसे सुधार भारत के अन्य भागों में स्वतंत्रता के बहुत समय बाद तक भी नहीं हो पाए थे।
- उन्होंने ऐसे व्यक्तियों को संरक्षण और प्रोत्साहन दिया, जिन्हें अंग्रेजों ने "राजद्रोही" करार किया हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन की प्रारंभिक हलचल उनके ही राज्य से प्रारंभ हुई थी। विनायक दामोदर सावरकर जैसे उत्कट देशभक्त भी कहते थे कि बड़ौदा में ही कोई भारतीय स्वाभिमान के साथ रह सकता है।
- सयाजीराव तृतीय को अंग्रेज "फरजंद-ए-खास" या "पसंदीदा पुत्र" कहते थे। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में भी उन्हें स्थान प्राप्त है। उनकी इस भूमिका की जानकारी ब्रिटेन के अभिलेखागारों में रखे गोपनीय अभिलेखों के आधार पर पहली बार सामने आई है।
- महाराजा कला, संगीत, संस्कृत और ऐतिहासिक सामग्री के परम संरक्षक थे। प्रतिभाओं को पहचानने का अद्भुत वरदान उन्हें प्राप्त था। डॉ. भीमराव अंबेड़कर, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, श्री अरविंद और जी. एस. सरदेसाई उन महान विभूतियों में से हैं, जिन्हें जीवन में आगे बढ़ने में पहला सहयोग महाराजा से ही प्राप्त हुआ।
- यह कहानी है राजसी व्यक्तित्व और जटिल मानवीय स्वभाव वाले बड़ौदा के सयाजीराव तृतीय की, जिसे सुना रहे हैं उनके प्रपौत्र। उनकी कहानी में जुड़ाव, सहानुभूति और लगाव है। उन्होंने कुछ भी छुपाया या छोड़ा नहीं है।
- 'दरबार में घटित घटना' यानी उन्हें राजगद्दी से उतारने की अंग्रेजों की साजिशों के तथ्य पहली बार पूरी स्पष्टता के साथ इस पुस्तक में

प्रकट हुए हैं। इसमें बताया गया है कि लंदन की अदालत में चले अनैतिक तलाक के मुकदमे में उल्टे ब्रिटेन के न्यायाधीशों ने उन्हें महाराजा के रूप में मान्यता दी, जो अंग्रेज दे ही नहीं रहे थे। अदालत ने स्पष्ट कर दिया कि बड़ौदा के महाराजा एक राज्य के राजा है। उन्हें ब्रिटेन के कानूनों से बांध नहीं जा सकता।

- फतेसिंहराव गायकवाड बड़ौदा के महाराजा की गद्दी के उत्तराधिकारी थे। वे मुँह में चांदी की चम्मच के साथ जन्मे थे। जब वे कॉलेज में पढ़ रहे थे, तभी ऐसी स्थिति बनी कि उन्हें महाराजा की पदवी धारण करनी पड़ी। साथ ही, तेजी से बदलती समाज व्यवस्था में परिवार के जटिल संबंधों की महती जिम्मेदारी भी उन पर आ पड़ी, जो उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त सुविधाओं के उपभोग में स्पष्ट रूप से बाधक बन गई। उन्होंने न केवल परिवर्तनशील परिवेश के प्रति स्वयं को कुशलता और सुरुचि के साथ समायोजित किया, बल्कि परिवर्तनों को ही चुनौती में बदल दिया। वे अपनी प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि हो गए। जीवन की कठिनाइयों के बीच से रास्ता निकालने की उनकी आश्चर्यजनक क्षमता ने उनके व्यक्तित्व को विद्वत्ता, विशिष्टता और विविध रुचियों से संपन्न कर दिया।
- किसी समय आखेट के अत्यंत शौकीन रहे फतेसिंह महाराज ने भारत के अग्रणी 'वन्यजीव संरक्षक के रूप में भी नाम कमाया। युवावस्था में क्रिकेट में भरपूर रुचि रखने वाले महाराजा ने भारतीय टीम के विदेशी दौरों में प्रबंधक तथा बी.बी.सी. के मशहूर टेस्ट मैच स्पेशल्स' में खेल विशेषज्ञ की भूमिका निभाई। वे एक अत्यंत ही उद्यमी व्यक्ति थे एवं लगातार यात्राओं में रहने के बावजूद वे फोटोग्राफी, पाककला, कविताएँ, पढ़ने जैसे अपने शौक के लिए समय निकाल लेते थे। साथ ही कला और संगीत को तथा अपने कुल के बारे में ऐतिहासिक शोध एवं लेखन को संरक्षण प्रदान करते थे।
- लेखक के रूप में फतेसिंह गायकवाड को उनकी पहली पुस्तक 'दि पेलेसेस ऑफ इंडिया' से ही प्रसिद्धि मिल गई थी। यह पुस्तक इंग्लैंड और अमेरिका दोनों जगहों से प्रकाशित हुई और बहुत चर्चित रही।
- (इस जीवनी के प्रकाशन से पहले 1 सितंबर 1988 को लेखक का स्वर्गवास हो गया)

6) सयाजी का विचार विश्व (खण्ड: प्रथम) (Sep-2017)

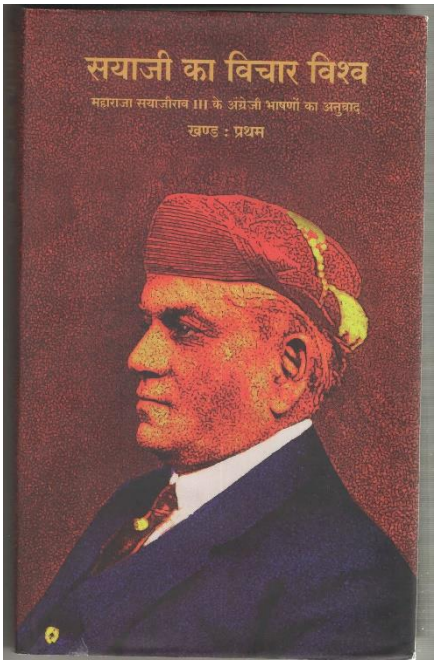

- महाराजा सयाजीराव गायकवाड (तृतीय) ने अपने लगभग छह दशकों के शासनकाल मे देश-विदेश में स्थान-स्थान पर जो भाषण दिये, उनके विषय-वैविध्य के आधार पर हम कह सकते हैं कि इनमें उन्नीसवीं रानी का पुनर्जागरण मुखरित हो रहा है। देश में उस समय बड़ी गहमागहमी का वातावरण था । जहाँ एक और समाज-सुधार आन्दोलनों के कारण देश एक वैचारिक क्रांति की और अग्रसर हो रहा था, वहीं दूसरी ओर स्वाधीनता संघर्ष की पावन शंखध्वनियों से अनुप्राणित हो देशभक्त बंदी भारतमाता की बेड़ियाँ काटने के लिए कमर कस चुके थे। परिस्थितियों के इन्ही धागों से महाराजा के भाषण बुने हुए हैं । उन्हीं भाषणों में से चयन करके यह पहला खण्ड तैयार किया गया है। इन भाषणों में उनका समय तो बोला ही है, हमारी समकालीनता से भी इनके गहरे सरोकार हैं और ये सरोकार तब तक बने रहेंगे जब तक हिन्दुस्तान जातिवाद, स्पर्शास्पर्श, रूढ़ियों एवं अंध विश्वासों, निरक्षरता, अभावों एवं घोर गरीबी, साम्प्रदायिकता, शोषण, भाषिक विवादों, नैतिक मूल्यों का ह्रास जैसी समस्याओं से जूझता रहेगा।
- महाराजा दीर्घद्रष्टा एवं संकल्पित मन के महान शासक थे । बड़ौदा राज्य को उन्होंने पूरे धैर्य एवं अपने प्रशासनिक कौशल से इन समस्याओं से मुक्त करके लोकमान्य तिलक के शब्दों में उसे 'स्वतंत्र लघुभारत' के एक आदर्श नमूने के रूप में बदल दिया था ।
- हिन्दी भाषी पाठकों के लिए ये भाषण महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ (तृतीय) को उनकी समग्रता में समझने के लिए सहायक होंगे तथा उन लोगों के लिए ये पौष्टिक- पाथेय का काम करेंगे जो इस समय धर्म, समाज, संस्कृति एवं राजनीति में कार्यरत हैं ।

7) सयाजी का विचार विश्व (खण्ड: द्वितीय) (Jan-2018)

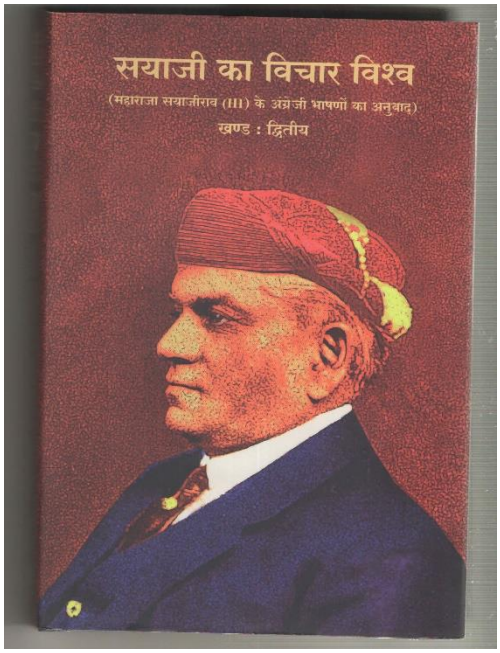

- महाराजा सयाजीराव का व्यक्तित्व देश और समाज के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने अपने एक भाषण में इसे स्पष्टतः कहा भी है, “मानव जाति तथा अपने देश की सेवा करने से बढ़कर अन्य कोई काम नहीं होता है। यही मेरे जीवन का ध्येय रहा है।" उन्होंने राज सिंहासन पर बैठकर कानून-कायदों के बल पर शासन नहीं चलाया; बल्कि हमेशा जनता के बीच जाकर उसकी आवश्यकताओं को समझते हुए पूरी सद्भावना तथा उदारतापूर्वक शासन किया था। यही कारण है कि वे जनता के बीच असीम लोकप्रियता अर्जित कर सके थे। नियति ने उन्हें सिंहासन पर बिठाया था, पर वे अपने विचारों एवं कार्यो के कारण जनता के हृदय में जाकर बैठ गये और आज भी उनका स्थान यथावत बना हुआ है; परन्तु यह स्थान बनाने में उन्हें अपने शासन काल में सतत परिश्रम करना पड़ा था|
- महाराजा अपने पूरे शासनकाल में तमस के खिलाफ लड़ाई लड़ते रहे । जड़ सामाजिक रूढ़ियों एवं अंध परम्पराओं को उखाड़ फेंकने का आह्वान करते. हुए अपने एक भाषण में कहते है, "इस लड़ाई में मैं आपसे, अपने देशवासियों से तथा उन सबसे जो देश को प्यार करते हैं, अनुरोध करता हूँ कि वे हमारी मातृभूमि के अंधेरे क्षेत्रों को आलोकित करने तथा निराश व दुःखी लोगों में आशा व आनंद का संचार करने के लिए जो भी संभावित प्रयास कर सकते हैं, अवश्य करें।'

8) सयाजी का विचार विश्व (खण्ड:तृतीय) (Dec-2018)

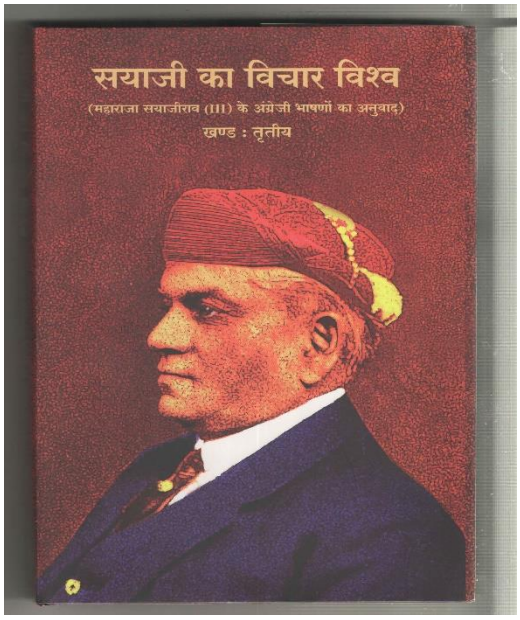

- 'सयाजी का विचार, विश्वः महाराजा सयाजीराव गायकवाड (तृतीय) के भाषणों का यह तीसरा और संभवतः अंतिम खण्ड है। जिसमें उनके 51 भाषणों का समावेश किया गया है। इस प्रकार प्रतिष्ठान की ओर से महाराजा के कुल 185 भाषण अनूदित रूप में के कुल 135 भाषण अनुदित रूप में प्रकाशित किये जा चुके हैं। इस खण्ड के दो चार भाषणों को छोड़कर लगभग सभी भाषणों का समय 1930 तथा उसके बाद का है। विषय और समस्याएँ तो इनमें वहीं हैं जो प्रायः नवजागरण काल में देश व समाज को उद्वेलित कर रही थीं। देश के अन्य महापुरुषों की भाँति महाराजा सयाजीराव गायकवाड (तृतीय) भी अपने शासन काल के शुरुआती वर्षों से ही विविध विषयों पर खुल कर अपने विचार समाज के सम्मुख रख कर उसे मध्यकालीन अंधकार की गहन गुहा से बाहर लाने का प्रयास कर रहे थे। समाज व राजनीति में तेजी से बदलाव आ रहा था। यहाँ तक आते- आते सामाजिक जड़ताएँ कुछ शिथिल पड़ गई थीं। सत्ताधीशों द्वारा बेफाम शोषण तथा भेदभाव पूर्ण नीति के कारण जनता में उनके विरुद्ध असीम आक्रोश था। जनता हर कीमत पर देश को स्वतंत्र देखने के लिए लालायित थी।
- महाराजा सयाजीराव के इन भाषणों के स्वरूप निर्धारण में इन्हीं परिवर्तित परिस्थितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके इन भाषणों का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यह है कि इनमें सर्वत्र समाज व देश सर्वोपरि रहे हैं, अन्य सभी बातें गौण हैं।